अजायब बानी

मासिक पत्रिका

मई-2021

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–उन्नीसवां | अंक–पहला | मई–2021

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
कर्मों का भुगतान 3
(स्वामी जी महाराज की बानी)

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज 23

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से
बीबी जेयना 29

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से
दया प्राप्त करने का तरीका 31

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **ज्योति सरदाना, परमजीत सिंह**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 230 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

20 मई 1996
दिल्ली

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

कर्मों का भुगतान

DVD No-372

स्वामी जी महाराज की बानी

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है। जिन्होंने हमारी गरीब आत्मा पर रहम किया और हमें अपना यश करने का मौका दिया। गुरु नानकदेव जी कहते है:

जिया जन्त सब तुध उपाए, जित–जित भाणा तित–तित लाए

हम जो कुछ भी इन आँखों से देख रहे हैं इस सबको पैदा करने वाला परमात्मा है। परमात्मा को जो अच्छा लगता है कि मैंने किसे संसार में बार–बार चक्कर लगवाने है, किसे दु:खों–सुखों की नगरी में रखना है और किसे अपने साथ जोड़ना है। परमात्मा ने जिसे अपने साथ जोड़ना होता है उसे सबसे पहले किसी महापुरुष की संगत में लाता है।

जब आसमान पर बादल होते हैं तो हमें पता लग जाता है कि बारिश होगी, जमींदारों को खुशी होती है। इसी तरह जब हम पूर्ण महात्मा की संगत–सोहबत में जाते हैं तो हमें उसी दिन से हौंसला हो जाता है कि हमारा भाग्य जाग गया है, अब हमें भक्ति का दान मिलेगा। जब महात्मा हमारे अंदर सच्ची तड़प देखते हैं तो वे हमें भक्ति का दान बख्श देते हैं।

परमात्मा की भक्ति अमोलक धन है, उत्तम पदार्थ है। यह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की नाशक है। परमात्मा की भक्ति ही हमें परमात्मा के दरबार में सच्चा सुख, सच्ची इज्जत दिलवाती है। भक्ति का पदार्थ हम किसी हुकूमत के जरिए प्राप्त नहीं कर सकते, न इसे खेतों में उगा सकते हैं और न इसे धन–दौलत के जरिए ही प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ एक ही तरीका है कि परमात्मा हमें किसी पूर्ण महात्मा के चरणों में लाए और महात्मा मेहर करके हमें भक्ति का दान दें।

परमात्मा के भक्त परमात्मा से बड़े नहीं होते लेकिन वे परमात्मा से कम भी नहीं होते। उन्होंने परमात्मा को अपने ऊपर खुश कर लिया होता है। जब कोई इंसान किसी पर खुश हो जाता है तो वह उससे कहता है, ''मैं तुझसे खुश हूँ, तू माँग क्या माँगता है?'' वह उसे हैसियत के मुताबिक कोई न कोई ईनाम देता है।

हमारा वह ईनाम बहुत छोटा होता है लेकिन जिस पर परमात्मा खुश हो जाता है दयालु हो जाता है उसकी बख्शिश का जो ईनाम है उसका कोई अंदाजा नहीं लगा सकता कि उसका दान कितना बड़ा है। उस दान का हमें तभी पता लगता है जब हम उस दान की कद्र करने लग जाते हैं। हम कद्र तभी करते हैं जब गुरु के बताए हुए रास्ते पर चलते हैं, उस समय हमें पता लगता है कि यह दान न तो खाने से खत्म होता है, न खर्च करने से खत्म होता है और न बाँटने से ही खत्म होता है। हमारे गुरु को यह खजाना उनके गुरु से मिला होता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

प्यो दादे का खोल डिठ्ठा खजाना तो मेरा मन भया निधाना

जब हम ऊपर जाते हैं तो हमें पता लगता है कि हमारा गुरु कितने बड़े खजाने का मालिक था। जिन प्रेमियों को परमात्मा सावन के चरणों में बैठने का मौका मिला है उन्हें पता है कि जिस तरह माता–पिता अपने लाडले बच्चों को खाना खिलाते समय कहानियाँ सुनाते हैं उसी तरह महाराज सावन सिंह जी हमें बहुत प्यार से कहानियाँ सुनाया करते थे। आप सुनाया करते थे कि पीरान क्लीयर का वाक्या है कि वहाँ साईं भीख बहुत कमाई वाला था, उनका एक तालिब था। जब उस तालिब को नाम का रंग चढ़ा तो वह दिल्ली के बाजारों में नारे लगाने लगा:

या भीख या भीख है भी भीख होसी भी भीख

वहाँ शरा का पाबंद एक काजी खड़ा था, उसने तालिब से कहा, ''तू भीख किसे कहता है? तू अल्लाह कह या रसूल कह।'' तालिब ने

कहा, ''मेरा अल्लाह या रसूल सब कुछ भीख है।'' काजी ने तालिब को बहुत समझाया लेकिन जब वह नहीं समझा तो काजी तालिब को मस्जिद में ले गया, वहाँ काजी के बहुत से साथी जमा हो गए। जब उन्होंने देखा कि यह मानता नहीं यह काफिर है तो उन्होंने उसे फतवा लगा दिया कि इसे फाँसी पर लटका दिया जाए। वह जमाना बादशाह अकबर का था। बादशाह अकबर न्यायकारी था, उसका हुक्म था कि मैं जब तक फतवे पर दस्तखत न करूँ किसी को फाँसी नहीं दी जा सकती।

जब वह फतवा अकबर के पास गया तो अकबर ने उस फकीर के बालके तालिब को बुलाया। अकबर ने उसे देखकर कहा कि यह तो एक मस्त फकीर है इसे फाँसी पर चढ़ा देना कोई अच्छी बात नहीं। अकबर ने तालिब से पूछा, ''तेरा भीख क्या कर सकता है?'' उस समय हिन्दुस्तान में बहुत अकाल पड़ा हुआ था। अकबर ने उस तालिब से पूछा, ''क्या तू अपने भीख से बारिश करवा देगा?'' तालिब ने कहा, ''मैं पूछ लेता हूँ।'' तालिब ने बाहर जाकर अपने मुर्शिद का ध्यान किया, उसने जो विनती की उसे मुर्शिद ने परवान किया क्योंकि वह फकीर मुर्शिद तक जाता था।

जब पूर्ण गुरु 'शब्द–नाम' देते समय आपके अंदर बैठ गया है तो आप उस जगह पहुँचकर फरियाद करें अगर फिर उस घर से खाली आ जाएं तो आप शिकायत करें। हम वहाँ पहुँचते नहीं, उसका जवाब सुनते नहीं अपने सवाल करते जाते हैं; आप उसका भी जवाब सुनें।

बहुत जबरदस्त बारिश हो गई। कई दिनों बाद फकीर का बालका आया तो अकबर ने कहा, ''क्यों भई बारिश हो गई?'' उसने कहा हाँ, भीख ने बारिश करवा दी। जब अकबर उसे धन–दौलत देने लगा तो उसने मना कर दिया। आखिर अकबर ने उसे भीख के नाम पर इक्कीस गाँवो का पटा लिखकर दे दिया। बालका अपने मुर्शिद भीख के पास गया तो भीख ने हँसकर कहा, ''तूने क्या माँगा? बारिश माँगी उस समय तू कुछ और

माँगता तो वह भी मिल जाता क्योंकि जब तूने मेरा ध्यान किया उस समय मेरा ध्यान अपने मुर्शिद में लगा हुआ था और मुर्शिद का ध्यान दरगाह में था अगर तू उस समय मुझे अल्लाह–वलि बनाने के लिए कहता तो मैं तुझे वह बना देता।''

जब हम नौं द्वारे खाली करके आँखों के पीछे जाते हैं वहाँ पहले स्थूल पर्दा है, स्थूल इन्द्रियाँ हैं, स्थूल मन है। ये स्थूल शरीर के हथियार– स्थूल इन्द्रियाँ हमें अंदर नहीं जाने देते, एकाग्र नहीं होने देते। ये हमें बाहर ही बाहर भ्रम में लिए फिरते हैं। जब हम स्थूल पर्दे को उतारकर सूक्षम में जाते हैं वहाँ सूक्षम इन्द्रियाँ हैं सूक्षम मन है ये हमें वहाँ रोकते हैं।

जब हम कारण में जाते हैं तो कारण इन्द्रियाँ हैं कारण मन है। जब हम पारब्रह्म में जाते हैं तो वहाँ आत्मा से सारे पर्दे उतर जाते हैं। हम कर्मों का भुगतान करने के लिए यहाँ आए हैं और हमने जो बुरे कर्म किए होते हैं वे सारे साफ हो जाते हैं आत्मा नेह कर्मी हो जाती है।

आत्मा से सारे पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँचकर ही आत्मा नेहकर्मी हो सकती है। वहाँ औरत–मर्द का लिंग भेद समाप्त हो जाता है। वहाँ मुल्कों के झगड़े नहीं कि यह अमेरिका, हिन्दुस्तान, अफ्रीका या यूरोप का रहने वाला है। यह काला है या गोरा है, अमीर है या गरीब है, वहाँ कोई झगड़ा नहीं कोई पक्षपात नहीं; वहाँ तो परमात्मा है प्यार है।

पारब्रह्म सन्तों की तीसरी मंजिल है और सच्चखंड पाँचवी मंजिल है। पारब्रह्म में पहुँचे हुए को जब साधुगति प्राप्त हो जाती है वहाँ कर्मों की सारी जुगात चुकाई जाती है। हम कर्मों की जुगात जप–तप, पूजा–पाठ से नहीं चुका सकते बल्कि इससे हम कर्मों की गठरी को और भारी कर लेते हैं।

मन में लहर उठती है कि शायद हम धूनिया तपाकर **कर्मों का भुगतान** कर देंगे। मुझे बाबा बिशनदास से 'दो–शब्द' का भेद मिला था। आप कहा करते थे, ''मन के दाँव–पेंच ही लहर उठाते हैं, जब आग में बिठा देते हैं

तो यह भला मानस अंदर से हँसता है क्योंकि मन को न कोई सेक होता है न कोई तकलीफ होती है यह अंदर बैठा हँसता है। मन में लहर उठती है हम सिर में ठंडा पानी डलवाकर शरीर को ठंडा करते हैं।'' मैंने ये सब कर्म बहुत प्यार से किए हैं लेकिन जब बाबा बिशनदास जी के चरणों में गया तो आपने कहा, कभी ठंडे दिल से सोचा है कि आग तो अंदर बहुत जल रही है। जब काम की आग भड़कती है तो इंसान रिश्तेदारी भूल जाता है उसे पास खड़ा आदमी भी दिखाई नहीं देता। काम बेशर्मी का कारण बनता है, काम अपना पराया नहीं देखता। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

निमख स्वाद कारण कोट दिनस दुःख पावे
घड़ी मुहित रंग माणें रलिया बहोर बहोर पछतावे

थोड़ी सी विलासिता की खातिर ही करोड़ दिन दुःख पाता है। करोड़ दिन के तैंतिस हजार साल बनते हैं अगर हमें यह पता हो तो क्या हम इतना घाटेमंद सौदा करेंगे, इस जहर को खाएंगे? गुरु साहब कहते हैं:

देश छोड़ परदेसे धाया, पंज चंडाल नाले ले आया।

हम घर–बार, बाल–बच्चे, समाज सब कुछ छोड़ देते हैं लेकिन हमनें जिन पाँच डाकुओं को छोड़ना था हम उन्हें नहीं छोड़ सकते क्योंकि हमें यह ज्ञान नहीं कि ये पाँचों डाकू कहाँ रहते हैं और किस जगह से आकर हमारे ऊपर हमला करते हैं। जब हम पूर्ण महात्मा के चरणों में जाते हैं तो वह हमें बहुत प्यार से समझाते हैं:

गुरु दुःख लाई गोई जित्थे मिरग परत है चोरी
मूंद लिए दरवाजे वाजे अनहद बाजे

यह वह रास्ता है जहाँ से ये डाकू हमला करते हैं। गुरु हमें बताते हैं कि ब्रह्म तक ये डाकू तेरे ऊपर हमला करेंगे तू इससे ऊपर जा। ये पाँचों डाकू हमारे ऊपर नौं दरवाजों के रास्तों से हमला करते हैं। जब हम नौं दरवाजे बंद करके उस शब्द की आवाज के साथ जुड़ जाते हैं तो जो

मन जप–तप से नहीं मानता उसे अंदर का राग सुनाकर ही बस में कर सकते हैं और इन डाकुओं से छुटकारा पा सकते हैं। आपके आगे स्वामी जी महाराज का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनने वाला है:

सतगुरु सरन गहो मेरे प्यारे। कर्म जगात चुकाय।।

आप प्यार से कहते हैं कि संसार के सब समाज यही कोशिश करते हैं कि हम परमात्मा से मिलें। परमात्मा से मिलने के लिए कोई मंदिर जाता है, कोई मस्जिद जाता है, कोई गुरुद्वारे जाता है, कोई तीर्थों पर जाकर लम्बी–लम्बी यात्राएं करता है। सबकी यही इच्छा होती है कि हम उस प्रभु परमात्मा से मिलें क्योंकि परमात्मा से मिले बगैर हमारा जीवन सफल नहीं होता। संसार में हमें कोई ऐसा आदमी नहीं मिलेगा जो यह कहे कि मैंने परमात्मा को जंगलों–पहाड़ों या किसी मंदिर में ढूंढ़ लिया है।

परमात्मा हम सबके अंदर है, जिस जगह परमात्मा है अगर हम उसे वहाँ ढूंढ़ेगे तो वह हमें मिलेगा। आप किसी भी सन्त–महात्मा की बानी पढ़ कर देख लें हर एक महात्मा ने हमें यही बताया है कि आपको जिस चीज की तलाश है जिसे आप मंदिर–मस्जिद, जंगलों–पहाड़ों में ढूंढ़ते हैं वह आपके अंदर है। मंदिर–मस्जिद बुरे नहीं, हमारे लिए इज्जत के काबिल हैं हमें इनमें जाना चाहिए लेकिन हमें ठंडे दिल से यह भी सोचना चाहिए कि ये क्यों बनाए गए हैं?

आमतौर पर हमें घरों में समय नहीं मिलता, मंदिर–मस्जिद एकान्त जगह बनाई गई है आप इनमें जाकर भजन–अभ्यास करें। आप मंदिर–मस्जिदों से प्रेरणा लें कि हम इनमें सफाई करते हैं, वहाँ शराब–मीट नहीं खाते और किसी की चुगली–निन्दा भी नहीं करते। अगर वहाँ कोई शोर–शराबा हो तो हम फौरन टोक देते हैं कि आप मंदिर में क्या लेने आए हैं, हमें वहाँ से क्या शिक्षा मिलती है? गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैं:

हरि मंदिर ऐहो शरीर है ज्ञान रतन प्रकट होय

सन्तों की बानी बहुत अमूल्य है अगर हम इसे विचारेंगे तो एक नहीं तो दूसरे सतसंग में समझ आ जाएगा। असली मंदिर तो हमारा शरीर है, मालिक से मिलने का ज्ञान हमें शरीर के अंदर जाकर ही होगा। जो मंदिर–मस्जिद हमनें अपने हाथों से बनाए हैं उनमें हम जूते लेकर नहीं जाते। उनमें धूप जलाते हैं और उन्हें साफ–सुथरा रखते हैं। जो मंदिर परमात्मा ने बनाया है जिसके अंदर वह खुद बैठा है उसके अंदर हम कभी मीट–शराब डालते हैं इसके साथ बुरे कर्म करते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

निर्दया नाहीं ज्योत उजाला

जो लोग किसी की जान लेते हैं, जिनके अंदर किसी के लिए दया नहीं वे चाहे कितना ही जोर लगा लें, उनके अंदर ज्योत और नाद प्रकट नहीं होता अगर हम परमात्मा से मिलना चाहते हैं और इस मंदिर में जाना चाहते हैं तो हमें इसकी सफाई की तरफ ध्यान देना पड़ेगा। महात्मा हमें पवित्र सिमरन देते हैं जिसे हम बार–बार दोहराकर तीसरे तिल पर एकाग्र होते हैं तो हमारे बुरे ख्याल धीरे–धीरे बाहर निकल जाते हैं और हमारी आत्मा का शीशा साफ हो जाता है। अगर साफ शीशे में हम हँसता हुआ चेहरा देखेंगे तो हँसता हुआ नजर आएगा अगर रोता हुआ देखेंगे तो रोता हुआ नजर आएगा। शीशा मैला है तो उसमें हमारा मुँह साफ नहीं दिखेगा।

इसी तरह अगर हम यह सोचें कि हम भटके मन के अंदर उस प्रभु–परमात्मा के दर्शन कर लेंगे तो हम अपने आपको धोखा दे रहे हैं और दूसरे लोगों को भी धोखा दे रहे हैं। वह प्रभु–परमात्मा हमारे अंदर बैठा है वह धोखा नहीं खाता। दादू साहब कहते हैं:

वेद न भेद भेख नहीं जानत कोई वेद न हामी

आप कहते हैं कि मैं आपको वेदों से ऊपर की बात बताता हूँ, वेद तो ब्रह्म तक ही बयान करते हैं। जिन्होंने भेष धारण किया होता है उन्हें पता नहीं कि शरीर के अंदर कैसे जाना है, कैसे इस मंदिर में दाखिल होना

है? सन्त–महात्माओं ने आँखों से देखा होता है वे सुनी–सुनाई बातें नहीं करते। हम दुनियादार वेदों–शास्त्रों से याद करके सुनी–सुनाई बातें एक–दूसरे को सुनाते हैं लेकिन महात्मा जो कुछ देखते हैं वे उसी आधार पर बोलते हैं। सन्त कहते हैं:

सन्तन की सुन साँची साखी, जो बोलण सो पेखन आखी

एक आदमी ने भौगोलिक विद्या पढ़ी है वह नक्शा देखने का बहुत माहिर है, वह नक्शे पर अंगुली रखकर बता देता है कि रूस कहाँ है अमेरिका कहाँ है यूरोप कहाँ है और हिन्दुस्तान कहाँ है? इसमें कितनी नदियाँ, कितने दरिया, कितने पुल है? लेकिन एक इंसान उससे अलग है जिसने आँखों से देखा है। उनमें से सच्चा वह है जिसने आँखों से देखा है। नक्शा देखने वाले आदमी ने तो नक्शा देखा है नक्शे में असल नहीं होता।

मैंने सन् 1971 में 16 पी.एस में एक डिग्गी बनवाई उस वक्त वह नक्शे में आ गई। जब फिर वहाँ आर्मी की हलचल हुई तो उस डिग्गी को नक्शे में देखकर कुछ फौजी अफसर आ गए कि यहाँ डिग्गी है। हमने वह डिग्गी उखाड़कर दूसरी जगह बना दी थी। अब आप सोचकर देखें! नक्शों में कितनी सच्चाई होती है? नक्शे बदल जाते हैं, सच्चाई नहीं बदलती।

आदि सच जुगादि सच

परमात्मा आदि–जुगादि से सच है। ऐसा नहीं कि पहले परमात्मा कोई ओर था अब कोई और है या कल को गद्दी किसी और के पास चली जाएगी। **कर्मों का भुगतान** बाहर के किसी भी कर्मकांड से नहीं किया जा सकता। अगर हम अच्छे या बुरे कर्म करते हैं तो उनका भुगतान करने के लिए फिर आना पड़ेगा।

कुछ दिन पहले अमेरिका से मुझे एक पंजाबी प्रेमी का पत्र आया कि उसे किसी प्रेमी ने सलाह दी कि तू कुछ लोगों को भोजन करवा तुझे पुण्य लगेगा। उस प्रेमी ने काफी पैसा खर्च करके भोजन मँगवाया और उनसे

पूछा कि यह भोजन वैष्णो है? उन्होंने कहा हाँ। जिन लोगों ने सामान बेचना होता है कई बार वे लोग झूठ भी कह देते हैं। उस प्रेमी ने भोजन करवा दिया फिर तहकीकात करने के लिए उस कंपनी वाले के पास गया जिन्होंने उस भोजन को तैयार किया था। कंपनी वाले ने कहा कि मैं इसमें अंडे डालता हूँ और भी बहुत सी चीजें डालता हूँ। इस प्रेमी को बहुत ठेस लगी कि मैंने तो पुण्य किया था लेकिन पाप हो गया। पैसे देने वाले को, कत्ल करने वाले को और खाने वाले को भी उतना ही पाप लगता है। हम बाहर जितने भी कर्म करते हैं उनके लिए भी हमें सोचना पड़ेगा।

खेत पछाणें बीजे दान

दान देते समय हमें यह सोचना पड़ेगा कि यह आदमी कैसा है? यह इस पैसे से शराब–मीट तो नहीं खा–पी जाएगा, कहीं हमारे दिए हुए पैसे जुए में तो नहीं लगा देगा? इसी तरह खाना भी सोचकर खिलाना पड़ता है। **कर्मों का भुगतान** करने के लिए अपनी आत्मा से सारे पर्दे उतारकर गुरु की दया प्राप्त करें। जब गुरु पर सच्चा भरोसा आ जाता है हम गुरु के सच्चे उपदेश पर चलते हैं तो हमारे **कर्मों का भुगतान** हो जाता है।

भूल भरम में सब जग पचता। अचरज बात न काहु सुहाय।।

यह अचरज बात है कि हिन्दु, मुसलमान, अमेरिकन सारा जग ही भूला हुआ है। आप गुरु की शरण में जाएं, नाम लेकर अंदर जाकर परमात्मा से मिलें। एक इंसान पर ऐतबार लाना कितना मुश्किल हो जाता है, हम सोचते हैं कि एक इंसान किस तरह परमात्मा हो सकता है। परमात्मा ने इतने बड़े–बड़े खंड–ब्रह्मांड बनाए हैं, वह किस तरह इंसान में समा गया है। ये चीजें हमें बहुत परेशान करती हैं लेकिन जिन महात्माओं ने देखा है वे भी गलत नहीं कहते।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जो काम एक इंसान कर सकता है वही काम दूसरा इंसान भी कर सकता है।'' किसी सन्त ने यह नहीं कहा

कि हमने परमात्मा को देखा है, आप नहीं देख सकते। आप भी करनी करें, आप अपने अंदर देख सकते हैं। गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैं:

काया अंदर सब कुछ वसे, खंड मंडल पाताला

आप जो कुछ बाहर देख रहे हैं यह सब कुछ इस काया के अंदर ही बसता है। गुरु तेगबहादुर साहब कहते हैं:

घट घट में हर जू बसे सन्तन कहो पुकार

सन्तों ने तो पुकार–पुकार कर कहा है कि वह परमात्मा हर एक के घट में बसता है। हम सोचते हैं कि परमात्मा किसी बड़े ग्रंथ में सोया हुआ है या किसी मंदिर में बैठा हुआ है या किसी पहाड़ की चोटी पर बैठा हुआ है। कबीर साहब कहते है:

ज्यों तिल माही तेल है ज्यों चकमक में आग
तेरा प्रीतम तुझमे जाग सके तो जाग

तिलों के अंदर तेल है, पत्थर के अंदर अग्नि है इसी तरह वह परमात्मा आप सबके अंदर है, आप हिम्मत करके उससे मिलें। गुरु तेगबहादुर साहब की बानी में आता है:

काहे रे वन खोजन जाई, सर्वनिवासी सदा अलेपा तो ही संग समाई

आपने गुरु तेग बहादुर साहब की हिस्ट्री पढ़ी होगी। आप बचपन से ही एक गुफा में बैठकर अभ्यास करते रहे। आपने बहुत साल 'सुरत–शब्द' का अभ्यास किया। आपको अपने गुरु की दया से जो कुछ भी अंदर से प्राप्त हुआ आपने वह हमारे भले के लिए गुरबानी में लिख दिया कि परमात्मा आप सबके अंदर रहता हुआ भी न्यारा है।

पोहप मद्य ज्यों वास वसत है मुक्कर में जैसे स्याही
तैसे ही हरि वसे निरंतर घट ही खोजो भाई

फूल के अंदर खुशबू है, शीशे के अंदर रोशनी है इसी तरह वह परमात्मा आपके अंदर है आप अंदर जाकर उसकी खोज करें।

बाहर भीतर एको जाने ऐह गुरु ज्ञान बताई
जन नानक बिन आपा चीन्हें मिटे न भ्रम की काई

हमने पहले परमात्मा को अंदर देखना है फिर ही समझेंगे कि वह सबके अंदर है। इसका पता पूर्ण महात्मा बताएगा कि आपने किस रास्ते से अंदर जाना है। महात्मा से रास्ता ले लेना ही काफी नहीं, जब तक हम कमाई करके अंदर नहीं जाते खुद नहीं देखते तब तक हमारा भ्रम दूर नहीं होता। सन्त हमें अंधविश्वास नहीं देते अगर हम अंधविश्वास में बैठे हैं तो इसमें सन्तों का कसूर नहीं हमारा कसूर है। मन की आदत है कि यह अपने ऊपर इल्जाम नहीं लेता।

महाराज जी कहा करते थे, ''यह मन तोप के आगे खड़ा हो जाएगा, भूखा भी रह जाएगा लेकिन अभ्यास नहीं करेगा।'' इसे अभ्यास पर बिठाएं तो हजारों बहाने करेगा, कहेगा नींद आती है, शरीर टूटता है। परमात्मा सबके अंदर है आप उससे मिलकर ही अपने जीवन को सफल बना सकते हैं लेकिन हमें इस बात पर ऐतबार करना ही मुश्किल हो जाता है कि वह परमात्मा हमारे अंदर है।

भागहीन सब जग माया बस। यह निरमल गति कोइ न पाय।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''जीव किसके भाग्य लाए अगर यह थोड़ा बहुत भजन करता भी है तो कोई न कोई आशा रखकर करता है कि मेरा बच्चा ठीक हो जाए, मेरा मुकद्दमा दूर हो जाए। भजन पर पाँच मिनट लगाता है लेकिन अरदास करने में घंटा लगा देता है। गुरु के समझाने के मुताबिक नहीं चलता।'' सन्त कहते हैं कि जो कुछ प्रालब्ध में लिखा है उसे अवश्य भोगना पड़ेगा।

मैं कई बार सच्चे पातशाह महाराज सावन सिंह जी की कहानी सुनाया करता हूँ। एक सवार जा रहा था आगे जाट का रहट चल रहा था। सवार ने जाट से कहा कि मैंने अपने घोड़े को पानी पिलाना है। जब

सवार अपने घोड़े को रहट के पास करता तो रहट की टी–टी की आवाज सुनकर घोड़ा पीछे भाग जाता। सवार ने जाट से कहा कि रहट को रोक ले। जब जाट ने रहट को रोका तो उसमें पानी नहीं आया। सवार ने फिर कहा कि इसे चला। जाट ने जब रहट चलाया तो घोड़ा टी–टी की आवाज सुनकर फिर भाग गया। आखिर जाट ने सवार से कहा, ''प्यारेया, इसे पानी तो टी–टी में ही पीना पड़ेगा।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हमें दुनिया में रहते हुए दुनिया की टी–टी में ही भजन करना पड़ेगा। यह आपका काम है आपने ही करना है, जहाँ छोड़ा है वहीं से ही शुरु करना पड़ेगा।'' शायद कई प्रेमी बीबी कीर्ती को जानते होंगे? वह भजन बोल रही थी:

आपे ही ले जाएगा सारी संगत दा वाली

महाराज सावन सिंह जी ने कहा कि यह भजन न बोलें और कोई भजन बोलें अगर वह अपने आप ही ले जाएगा तो आपको तकलीफ होगी। प्यारेयो, जो काम हमारा है वह हमने ही करना है। महाराज जी कहा करते थे कि यह तो ऐसा हुआ:

लद् वी दे लदेंदा वी दे, लद्ण वाला भी घरो ही दे

आपको रास्ता बता दिया है अब यह सेवक का काम है कि वह भजन करे लेकिन हम भजन करते हैं तो माया के पदार्थ माँगना शुरू कर देते हैं। ऊँचे भाग्य हों तो हम नाम की कमाई करें, गुरु से प्यार करें।

मैं अपने जीवन की घटना बताया करता हूँ कि जब दयालु परमात्मा कृपाल मेरे पास आए, तब मैंने आपसे यही कहा, ''मुझे नहीं पता कि मैंने आपसे क्या पूछना है? बचपन से मेरा दिल–दिमाग खाली है।'' मैंने अपने गुरु से यह नहीं पूछा कि आपकी क्या जाति है, क्या आप शादी–शुदा हैं या कुँवारे हैं, आपका कोई बच्चा है या नहीं? प्यारेयो, जब गुरु ने दया कर दी बख्शीश कर दी फिर क्या पूछना है? महाराज जी ने हँसकर कहा,

''मैं दिल–दिमाग खाली देखकर ही पाँच सौ किलोमीटर चलकर तेरे पास आया हूँ। दिमागी कुश्तियाँ करने वाले मेरे आस–पास बहुत लोग हैं।'' कबीर साहब कहते हैं:

जात न पूछो साध की पूछ लीजिए ज्ञान
मुल करो तलवार का पड़ा रहन दयो म्यान

शरीर म्यान है इसके अंदर जो शब्द की ताकत काम कर रही है वह तलवार है। सच्चे शिष्य का गुरु के पास आना इस तरह होता है जैसे हम खुष्क बारूद को आग के नजदीक कर दें। अगर हमारे ऊँचे भाग्य हों तो ही हमें गुरु पर ऐतबार आता है गुरु साहब कहते हैं:

जिन्हां मस्तक धुरो हर लिखया तिन्हा सतगुरु मिलया
अज्ञान अंधेरा कटया गुरु ज्ञान घट बलया
हर लद्धा रतन पदार्थों फिर बोहड़ न चलया
नानक नाम अराध्या अराध हर मिलया

जिसका धुर दरगाह से लिखा हुआ है, जब उसके अंदर सच्ची प्रीत उछाला मारती है तो मालिक उसे अपनी तरफ खींच लेता है। आँखें होने के बावजूद भी हमें अज्ञानता का अंधेरा चिपटा हुआ है। गुरु दया करके नाम का दीपक जला देता है। कोई महात्मा यह नहीं कहता कि मुझे आराधना करने से परमात्मा मिला है, वह यह कहता है, ''गुरु ने जो कहा मैंने वह किया।'' ऊँचे भाग्य हों तो हम इस तरफ आते हैं। गुरु ने नाम दे दिया है अब हमारी जिम्मेवारी है कि हम इसे आगे चलाएं।

जिन पर दया आदि करता की। सो यह अमृत पीवन चाहि।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''जिन पर आदि करता परमात्मा की दया हो जाती है, वे इस नाम के अमृत को प्राप्त कर लेते हैं। यह अमृत महात्मा से मिलता है। आप निन्दा–चुगली और चतुराई छोड़ दें क्योंकि चतुर को कुछ नहीं मिलता। गुरु साहब कहते हैं:

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

दुविधा में दोनों गए माया मिली न राम

कभी हम कहते हैं कि नाम ले लें कहीं हमारे साथ ठग्गी न हो जाए। अगर बैठ गए तो कहीं सुरत ही न लग जाए, कहीं मृत्यु न हो जाए। जिसे प्यास लगी होती है वह कभी इस तरह नहीं सोचता। जिन पर परमात्मा की दया होती है वही इस नाम के अमृत को पीते हैं। गुरु साहब कहते हैं:

अंतर खूंटा अमृत भरया शब्दे काढ़ पिए पनिहारी

आप कहते हैं कि अंदर तो शब्द का कुँआ लगा हुआ है, उस शब्द को डोरी से निकालना है। वह डोरी गुरु पकड़ाता है परमात्मा ने वह डोरी हम सबके अंदर रखी हुई है।

गुप्ते नाम वरते विच कलयुग घट घट हर भरपूर रहया

वह गुप्त नाम डोरी है। यह डोरी हर एक के अंदर है। गुरु उस डोरी को पकड़ाने के लिए आता है।

कहाँ लग महिमा कहुँ इस गति की। बिरले गुरुमुख चीन्हत ताहि।।

आप कहते हैं, ''हम इस अमृत की महिमा ब्यान नहीं कर सकते। कोई विरले–विरले गुरुमुख हैं जो इसे पीकर शान्त हो जाते हैं। जो पीते हैं वे इसका रस नहीं बता सकते। कबीर साहब कहते हैं:

कहत कबीर गूँगे गुड़ खाया पूछे कहन न जाई हो

गँगा गुड़ खा ले अगर हम उससे गुड़ का स्वाद पूछें तो वह अपने कंधे ही हिला सकता है। इसी तरह भीखा साहब कहते हैं:

भीखा बात अगम की कहन सुनन में नाहें
जो जाणें सो कहे न कहे सो जाणें नाहें

यह अगम की बात देखने से ताल्लुक रखती है। सच्चे पातशाह महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे अगर हम किसी गाँव में जाकर आगरा के ताजमहल की मिसाल दें तो ऐसा कौन सा मकान है जिसकी

मिसाल देंगे? जब मिट्टी की मिसाल मिट्टी से नहीं दे सकते तो सन्त सच्चखंड की क्या मिसाल दें, आपको उस रस का क्या स्वाद बताएं? जो उस रस को चखते हैं वे विरले हैं।

बिन गुरु चरन और नहिं भावे। इस आनँद में रहे समाय।।

आप कहते हैं, ''उनकी ऐसी हालत है कि उनका उठते–बैठते, सोते–जागते गुरु के साथ ही प्यार और गुरु के साथ ही लगन है।'' महाराज कृपाल सच्चे पातशाह लैला की मिसाल दिया करते थे कि किसी ने मियाँ मजनू से कहा कि तुझसे खुदा मिलना चाहता है। मजनूं ने कहा कि वह लैला के रूप में आ जाए मैं मिल लूँगा।

जब दुनिया के प्यार में इतनी कशिश है कि वह उसके बिना खुदा से नहीं मिलना चाहते। गुरु कुलमालिक है जिसका गुरु के साथ प्यार है क्या वह किसी और के आगे सिर झुकाएंगे? चाहे आप उन्हें सारी दुनिया की दौलत देकर कहें कि तुम अपने गुरु का नाम भुला दो क्या वे ऐसा कर लेंगे? लेकिन बहुत से भूले हुए ऐसे हैं जो गंगा जाते हैं गंगाराम बन जाते हैं, यमुना जाते हैं तो यमुनादास बन जाते हैं। गुरु रामदास जी कहते हैं:

जिन गुरु गोपया आपना से भला नहीं पंचो

अपने गुरु का नाम छिपाने से ज्यादा और क्या बुराई होगी? जब लड़की की शादी हो जाती है और वह जिस घर में जाती है तब उसके पति की मर्जी है वह उसे जिस नाम से बुलाए वह उसी में खुश रहती है। इसी तरह जब प्रेमी नौं द्वारे खाली करके गुरु के साथ प्यार लगा लेता है वह देख लेता है कि मेरा गुरु कुलमालिक है तो वह उसे किस तरह छोड़ सकता है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

मैं वेख वेख न रज्जां गुरु सतगुरु देहा

अपने गुरु की देह को देख–देखकर मेरा दिल नहीं भरता। इस देह में आकर ही उसने मेरा कल्याण किया, देह का सत्कार वही करता है जो

अंदर जाता है। हमें गुरु का थोड़ा सा भी दर्शन हो जाए तो वह अच्छा है। वह देह रूप में एक बार सामने आ जाए तो बयान नहीं किया जा सकता। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

गुरु गुरु गुरु कर मन मोर गुरु बिना मैं नाहीं होर
गुरु की टेक रहो दिन रात जांकी कोए न मेटे दात
गुरु करता गुरु करने जोग गुरु परमेशवर है भी होग
कहो नानक प्रभ ऐह जनाई बिन गुरु मुक्त न पाईऐ भाई

जिन्हें यह रस आ गया वे कभी भी गुरु का नाम नहीं भुला सकते। वे हमेशा सोते–जागते खुद तो गुरु गुरु करते हैं और वे दूसरे लोगों को भी इस तरफ लगा देते हैं। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''परमार्थ खुजली की तरह फैलता है जिस तरह एक को खुजली हो तो वह सबको खुजली करने में लगा देता है।'' सन्त–सतगुरु जब संसार में आते हैं वे शिष्य बन जाते है, अपने अंदर गुरु को प्रकट कर लेते हैं। वे जब गुरु गुरु करते हैं तो हम भूले जीव भी उनके चरणों में जाकर गुरु गुरु करने लग जाते हैं और अपने घर पहुँच जाते हैं।

दर्शन करत पिंड सुध भूली। फिर घर बाहर सुधि क्या आय।।

जब कभी भाग्य से उन्हें गुरु के दर्शन होते हैं तो उन्हें न अपनी सुध रहती है न बाहर की सुध रहती है, उन्हें गुरु के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं देता। महाराज जी मिसाल दिया करते थे कि जब कृष्ण भगवान विदुर के घर गए विदुर घर पर नहीं थे, विदुर की पत्नी स्नान कर रही थी। जब उसने अपने गुरु की आवाज सुनी तो वह उसी तरह भाग पड़ी उसे यह भी ख्याल नहीं रहा कि मैंने कपड़े नहीं पहने हुए। प्रेमियों की यह हालत है उन्हें अपने शरीर की भी सुध नहीं रहती। महाराज जी कहा करते थे:

जिन्हां लग्गे प्रेम तमाचे घर दे कम्मों गईयाँ
लैणा देणा सब सिटया ते खुह विच पईयां बहियाँ

वे इश्क के महकमें में जाकर अपनी जान गुरु के नाम लगवा देते हैं कि अब मैं तेरा हो गया हूँ, तूने मेरे ऊपर कब्जा कर लिया है। जागते हुए उनकी आँखों के आगे वह मनमोहनी मूरत फिरती है और सोते हुए भी वह मन मोहनी मूरत आँखों से दूर नहीं होती।

ऐसी सुरत प्रेम रंग भीनी। तिनकी गति क्या कहूँ सुनाय।।

जिनकी यह हालत है कि वे दिन–रात गुरु गुरु करते हैं उनकी आत्मा उस प्यार के रस में भीग जाती है। उनकी गति क्या बयान करेंगे, हम उनकी क्या महिमा जानेंगे? अगर हम उनकी महिमा जानते होते तो आज हम इस दु:खी दुनिया में क्यों फिरते? वे हमें नहीं मिले, अगर मिले तो हमने लापरवाही की।

कोई भी टीचर यह नहीं चाहता कि मेरा स्टूडेंट फेल हो जाए या कई साल एक ही क्लास में रहे। टीचर यही चाहता है कि यह इसी क्लास में फर्स्ट आए तभी मेरा दिल खुश होगा। इसी तरह सन्तों की भी यही कोशिश होती है कि मेरा सेवक मेरे बैठे–बैठे पूर्ण हो जाए। जो सेवक पूर्ण हो जाता है गुरु उसकी तरफ से बेफिक्र हो जाता है कि चलो एक तो पूर्ण हुआ। वह नहीं चाहता कि यह दूसरे या तीसरे जन्म का इंतजार करे। जब गुरु के दिल में इतनी दया और लगन है तो हम जो भजन–सिमरन करते हैं यह एक किस्म का गुरु को सहयोग देना ही होता है।

जोग बैराग ज्ञान सब रूखे। यह रस उन में दीखे न ताय।।

यह रस न योगियों को मिला न ज्ञानियों को मिला। वे पढ़–पढ़ाई की भूल–भुल्लैया में ही पड़े रहे, खुष्क आए और खुष्क ही चले गए। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

पढ़या शान्त न आवई पूछो ज्ञानियाँ जाए

आप हमारे कहने पर न रहें। जो दिन–रात पढ़ते रहते हैं आप उनसे पूछें क्या आपको शान्ति है, क्या आपने कभी नाम की चिंगारी देखी है? योगी प्राणायाम करते–करते थक गए और ज्ञानी पढ़ते–पढ़ते थक गए लेकिन उनमें यह रस नहीं।

बड़ भागी कोइ बिरला प्रेमी। तिन यह न्यामत मिली अधिकाय।।

ऐसा नहीं कि संगत में सारे ही ऐसे है कि आँखे बंद करके बैठ गए और उठ गए। आपकी संगत में बहुत से ऐसे प्रेमी हैं जिन्हें यह रस आता है वे अपने अंदर सतगुरु को प्रकट कर लेते हैं। बहुत सी बीबीयाँ मुझसे शिकायत करती हैं मेरे साथ जो बीबी आती है वह मुझसे बाद में नाम लेकर आई है वह अंदर बहुत कुछ देखती है लेकिन मुझे कुछ नहीं दिखता। यह अपने–अपने बर्तन का सवाल होता है।

महाराज कृपाल ने पच्चीस साल होका दिया, ''देने वाले का क्या कसूर है? मसला तो लेने वाले का है।'' सच्चे पातशाह महाराज सावन सिंह जी ने यही होका दिया कि देने वाले का क्या कसूर है हम अपने बर्तन के मुताबिक ही वस्तु प्राप्त कर सकते हैं। हमारी संगत में भी ऐसे भाग्यशाली जीव हैं जिन्हे वह रस मिला होता है।

राधास्वामी कहत सुनाई। यह आरत कोई गुरुमुख गाय।।

स्वामी जी महाराज ने इस शब्द में प्यार से बताया है कि हम पारब्रह्म में पहुँचकर गुरु की शरण प्राप्त करके ही **कर्मों का भुगतान** कर सकते हैं। जिनके ऊँचे भाग्य होते हैं उन्हें ही गुरु मिलता है। विरले–विरले गुरुमुख लोग साधु–सन्तों के जीवन काल में अपनी आत्मा को मन के पंजे से आजाद करके पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं। उन्हें देखकर सन्त–सतगुरु बहुत खुश होते हैं कि इन्होंने हमारे रहते हुए तरक्की कर ली है।

मैंने आपको जो कुछ प्यार से बताया है यह गुरुमुखों की आरती है। आरती में हम बाहर थाल में दीपक जलाकर किसी ईष्ट के आगे फेरते हैं लेकिन सन्तों की आरती कतरे का समुंद्र में मिल जाना है। आत्मा का परमात्मा में मिल जाना परमात्मा रूप हो जाना सच्ची आरती है। साधु–सन्तों का होका प्रेमियों के लिए होता है, प्रेमी उसे समझकर कमाई करते हैं और अपने जीवन को सफल बना लेते हैं।

हमें भी चाहिए स्वामी जी महाराज ने इस छोटे से शब्द में जो कुछ बताया है इसे समझकर अपने जीवन को सफल बनाए। हमें परमात्मा कृपाल ने अपनी भक्ति का जो मौका दिया है इससे पूरा फायदा उठाएं।

***

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

बचपन में ही कृपाल सिंह जी को सन्त कहा जाता था। आपको अपने गुरु बाबा सावन सिंह जी के पास जाने से पहले ही अंदरूनी अनुभव था। गुरु के चरणों में पहुँचकर आपने इस रास्ते में काफी तरक्की की। आप धार्मिक ऊँचाईयों तक पहुँचे और अपने गुरू के हुक्म अनुसार आपने लोगों की मदद करनी शुरू की। बहुत से लोग आपके पास मदद और सलाह लेने के लिए आते।

1. सन् 1915 में आपके चाचा का बेटा आपके पास रहने के लिए आया। उसे एक अजीब किस्म की बीमारी थी कि कभी–कभी उसके हाथ–पैर सुन्न हो जाते थे, डॉक्टर उसकी कोई मदद न कर सके। एक बार आपके सामने ही उसे दौरा पड़ा। आपको उसकी मुसीबत का ज्ञान हो गया। आपने उसे सहारा दिया और कहा कि पिछले कर्मों के कारण ऐसा

हो रहा है। आपकी आत्मा आराम से अंदर ध्यान कर सकती है लेकिन आपके पास आगे का रास्ता नहीं है इसलिए आपको तकलीफ है।

आपने अपने भाई से पूछा क्या वह चाहता है कि आगे का रास्ता खुल जाए? उसने जवाब में हामी भरी। आपने आगे का रास्ता खोल दिया और आपके भाई ने जागृत अवस्था में एक नशे का अनुभव किया। यह रास्ता आपने अपने गुरु के मिलने से नौं साल पहले खोला था।

2. एक बार आप रात के समय रावी नदी पर अभ्यास के लिए जा रहे थे, एक पुलिस कर्मचारी ने आपसे पूछा कि आप इतनी रात के समय कहाँ जा रहे हैं? आपने उससे कहा, ''मैं भजन–अभ्यास करने के लिए जा रहा हूँ, तू भी मेरे साथ आ जा।'' उस पुलिस कर्मचारी ने कहा कि यह आपको ही मुबारक हो। गुरुबानी में भी आता है कि जो प्रेमी भजन–अभ्यास करते हैं उनके संपर्क में जो भी आता है वे उन्हें भी भजन–अभ्यास के लिए प्रेरित करते हैं।

3. लाहौर में बाबा सावन सिंह जी का एक नामलेवा वकील श्रद्धालु सतसंगी था। उस वकील ने बाबा सावन सिंह जी से शिकायत की कि सन्त कृपाल सिंह जी के सतसंगो में इतना प्रकाश होता है कि लोग उनसे प्रभाावित हो जाते हैं। मुझे डर है कहीं वह अपने आपको गुरु की जगह प्रकट न कर दें। बाबा सावन सिंह जी ने कहा, ''प्रकाश के बिना सतसंग का क्या फायदा। जो खुद गुरु के साथ जुड़ा है वह औरों को भी अपने गुरु के साथ जोड़ेगा। कृपाल सिंह गुरु के प्रेम में डूबे हुए हैं उनका सतसंग सुनकर लोग उनके गुरु से जुड़ाव महसूस करते हैं।''

4. एक बार एक छोटे बच्चे की मृत्यु हो गई जो अपने माता–पिता और दोस्तों का बहुत प्यारा था। उसके क्रियाक्रम के दौरान पंजाब के एक शिक्षाशास्त्री भी वहाँ मौजूद थे, वह कृपाल सिंह जी की प्रभुता को मानते

थे। उस शिक्षाशास्त्री ने महाराज कृपाल को दो शब्द बोलने के लिए कहा। आपने कहा, ''जीवन का सबसे बड़ा सत्य इस शव में छिपा हुआ है। कुछ समय पहले इसके अंदर कुछ ऐसा था जो हर जीवित इंसानी शरीर में होता है लेकिन वह सच निकल जाने के बाद इसकी मृत्यु हो गई और मृत्यु के बाद यह कहाँ गया? किसे पता है कि अंत कब आ जाएगा?''

सतगुरु ने खुद इस रहस्य को सुलझाया होता है हमें यह ज्ञान केवल सतगुरु के चरणों में जाकर ही मिल सकता है। वहाँ मौजूद लोग आपके ये शब्द सुनकर बहुत प्रभावित हुए।

5. एक बार आपके गुरु ने आपको आज्ञा दी कि आप अधार्मिक लोगों की एक सभा में जाएं। आपके गुरु आपको ऐसी जिम्मेवारियाँ सौंपते थे क्योंकि आप सन्तमत के सिद्धान्त को सही तरीके से समझा सकते थे। सभी बोलने वालों ने कई धर्मों के खिलाफ बोला कि कोई भी धर्म जरुरी नहीं। आखिर आपने खड़े होकर सभा को सम्बोधित किया अगर सब इस नजरिये से सहमत हो जाएं तो इस सभा के प्रबंधक क्या करेंगे? उन लोगों में से किसी एक ने कहा कि नया पंथ बना लेंगे।

आपने कहा कि जब नया पंथ बनेगा तो नए नियम और रिवाज भी बनाने होंगे। इस दौरान एक ऐसा समय आएगा कि सच का महत्व कम हो जाएगा और हालात बिगड़ जाएंगे। जीवन छोटा है और बदलता रहता है। नया पंथ बनाने में बहुत समय नष्ट हो जाएगा और जीवन का असली मकसद हासिल नहीं होगा। क्यों न अच्छा हो कि इस सभा के प्रबंधक उन रिवाजों को छोड़ दें जो उलझन पैदा कर रहे हैं।

6. एक बुजुर्ग माता कृपाल सिंह जी को बहुत मानती थी, उसे ट्यूमर की वजह से बहुत दर्द था। उस माता को ऑपरेशन कराने की सलाह दी गई लेकिन आप ऑपरेशन करवाने के खिलाफ थे। आपने उस माता

को मौहम्दीन नाम के होम्योपैथिक डॉक्टर के पास जाने के लिए कहा। होम्योपैथिक डॉक्टर आपको अच्छी तरह से जानता था। डॉक्टर ने सारी बिमारी जानने के बाद कहा कि दवाई तो वह देगा लेकिन ठीक होने का काम आप पर छोड़ेगा क्योंकि आप परमात्मा के बंदे हैं और ज्यादा जानते हैं। उसकी दवाई से माता की हालत में जल्दी सुधार आने लगा।

जिन लोगों ने आपको देखा था वे मानते थे कि कुदरत आपके साथ है। आप जो कह देते थे वैसा ही होता था। जो प्रेमी भक्ति की राह पर आगे बढ़ते हैं वे पहचाने जाते हैं और सम्मान पाते हैं।

7. एक बार बाबा सावन सिंह जी आपको अपने गुरु बाबा जयमल सिंह जी के गाँव घुमाणा ले गए। बाबा सावन सिंह जी उस गाँव को तीर्थस्थान मानते थे। बाबा सावन सिंह जी ने आपको जमीन के नीचे बनी हुई वह झोंपड़ी दिखाई जिसमें बाबा जयमल सिंह जी लगातार अभ्यास किया करते थे। वह कील भी दिखाया जिसके साथ अभ्यास के समय अपने बाल बाँध लिया करते थे ताकि नींद न आए। जो भक्ति के रास्ते में कामयाब होना चाहते हैं, गुरु के साथ एक होना चाहते हैं उनके लिए अभ्यास करना जरुरी है।

8. एक बार की बात है कि आपको किसी सरकारी अफसर के घर सतसंग देना था लेकिन उस दिन आपको बहुत तेज बुखार हो गया। आपके गुरुदेव ने आपको यह कह रखा था कि जब तक बिस्तर से हिल सकते हो सतसंग न छोड़ें। आप धीरे–धीरे चलकर वहाँ पहुँचे और सतसंग शुरू किया। आपने बताया कि उस दिन सतसंग बड़ा था लेकिन सतसंग खत्म होने पर आपने महसूस किया कि आप तरोताजा थे। जब कोई गुरु का काम करता है तो गुरु पावर उसकी मदद करती है। आप कहा करते थे, ''हमारा काम रोजाना गुरु के दरबार में एक भिखारी की तरह बैठना

है जिस तरह हम शरीर को खाना देते हैं उसी तरह हमें आत्मा को भी नाम का खाना देना चाहिए।''

9. एक बार आप अपने गुरु बाबा सावन सिंह जी की एक झलक देखने के लिए धूप में खड़े रहे लेकिन बाबा सावन सिंह जी सारा दिन बाहर नहीं आए। शाम होते ही बाबा सावन सिंह जी बाहर आए उन्होंने आपको देखा और बुलाकर प्रशाद दिया। गुरु कई तरीको से शिष्य का इम्तिहान भी ले लेता है कि यह भक्ति मार्ग पर कितना मजबूत हुआ है।

10. आप जिन दिनों में गुरुमत सिद्धान्त लिख रहे थे उन दिनों एक सज्जन आपसे मिलने आया करते थे। उस सज्जन ने आपसे कहा कि आप बिना सोचे इतनी देर तक लिखते चले जाते हैं जैसे कुछ नकल कर रहे हैं। आपने कहा, ''वह जो चाहता है वह करवाता है। कलम रूकने का नाम नहीं लेती। यह मन और बुद्धि का काम नहीं बल्कि अंदरूनी मदद और शक्ति का काम है।''

11. जब गुरुमत सिद्धान्त पूरा हो गया तो आपने उसे अपने गुरु सावन सिंह जी के चरणों में रखकर कहा कि यह पवित्र पुस्तक उनके नाम से प्रकाशित की जाए। कुछ समय बाद इस पुस्तक को बाबा सावन सिंह जी के नाम से प्रकाशित किया गया।

12. बाबा सावन सिंह जी गर्मी के दिनों में डलहौजी जाया करते थे। एक बार आप वहाँ तीन महीने के लिए गए लेकिन आपने वहाँ और तीन महीने रहने का इरादा कर लिया। जब कृपाल सिंह जी को यह पता लगा तो आपने बाबा सावन सिंह जी को पत्र लिखा कि आपसे बिछड़े हुए तीन महीने बीत गए हैं आपकी तो वहाँ बसन्त है लेकिन हमारा यहाँ अन्त है। महाराज सावन सिंह जी ने वह पत्र अपने सचिव को दिखाकर कहा कि अब हम यहाँ कैसे रूक सकते हैं? उसके दो दिन बाद बाबा सावन सिंह जी वापिस डेरा ब्यास आ गए।

13. कृपाल सिंह जी के बड़े भाई सरदार जोधसिंह ने डेरा ब्यास में सतसंग के लिए एक बहुत खूबसूरत मकान बनवाया। बाबा सावन सिंह जी अपने कुछ शिष्यों को साथ लेकर वहाँ गए। बाबा सावन सिंह जी ने वहाँ मौजूद सब प्रेमियों को माल्टा का प्रशाद दिया इसी तरह सरदार जोधसिंह को माल्टा का प्रशाद देकर अपने दोनों हाथ उसके सिर पर रख दिए।

जब सन्त कृपाल सिंह जी की बारी आई तो आपने बाबा सावन सिंह जी के पैर छुए तब दोनों ने एक–दूसरे के चेहरे को देखा। बाबा सावन सिंह जी अपने दोनों हाथों से कृपाल सिंह जी की झोली में माल्टा का प्रशाद डालते गए। यह एक देखने लायक दृश्य था कि गुरु किस तरह अपनी भक्ति का खजाना लुटा रहा था।

बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे कि जिस इंसानी शरीर में गुरु पावर ने काम करना है उसे खोजा जाता है। नाम लेने के बाद जब कृपाल सिंह जी ब्यास गए तो बाबा सावन सिंह जी ने उनके ठहरने की व्यवस्था का निरिक्षण किया। कृपाल सिंह जी ने शर्म महसूस की और कहा कि आप चिन्ता न करें। बाबा सावन सिंह जी ने उत्तर दिया, ''ठीक है! भविष्य में तुम ही सबकी देखभाल करोगे।''

एक बार आप सुबह 9.30 बजे अपनी साईकिल से ऑफिस जा रहे थे। रास्ते में आप मुख्यमंत्री के सरकारी घर के आगे से निकले। मुख्यमंत्री अपनी बेटी की शादी की व्यवस्था की जाँच कर रहा था कृपाल सिंह जी ने उस मंत्री की तरफ देखा और कहा कि हमें लगता है कि दुनिया में हम नहीं होंगे तो दुनिया रूक जाएगी लेकिन हम सच्चाई से दूर हैं। अगर इस सज्जन की मृत्यु हो जाए तो ये सब काम कैसे होंगे? बदकिस्मती से उसी रात स्नानघर में उस सज्जन का पैर फिसला, ब्रेन हेमरेज हुआ और वह चला गया।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

बीबी जेयना

मुस्लिम जाति की बीबी जेयना सन्त कृपाल सिंह जी महाराज की शिष्या थी। एक दिन वह बीमार हो गई और उसे लेने के लिए मौत के पाँच दूत आए। वे दूत आपस में बात कर रहे थे कि उन्हें बहुत ध्यान रखना पड़ेगा क्योंकि यह सन्तों की आत्मा है और इस आत्मा ने पूर्ण गुरु से नाम लिया हुआ है। जब वे दूत बीबी जेयना के बिस्तर के नजदीक पहुँचे तो दूतों को बहुत ज्यादा गर्मी महसूस हुई और वे एक–दूसरे से बोले कि ये सन्तों की आत्मा है इसलिए इस बारे में कुछ नहीं कह सकते।

उनमें से एक दूत औरत के रूप में था, वह बीबी जेयना के पैरों की तरफ खड़ा हो गया बाकी उसके आस–पास खड़े हो गए लेकिन उनमें से किसी की भी हिम्मत बीबी जेयना के नजदीक जाने की नहीं हुई। उस समय बीबी जेयना अपने घर से बाहर आई लेकिन शारीरिक कमजोरी होने के कारण वह पास की नहर में गिर गई, वहाँ आस–पास उसे बचाने वाला कोई नहीं था।

उस समय बीबी जेयना ने अपने गुरु हुजूर कृपाल सिंह जी के बारे में सोचा तभी उसने अपने सिर के ऊपर एक खूबसूरत उड़ती हुई कार में हुजूर कृपाल को देखा। महाराज कृपाल ने बीबी जेयना को नहर से बाहर निकाला और उसे चाँद, तारे और सूरज को पीछे छोड़कर बहुत ऊँची जगह पहुँचाकर खुद ओझल हो गए।

वहाँ एक बहुत बड़ा शहर था और बहुत से लोग बैठे थे। बीबी जेयना ने उनसे पूछा कि आप यहाँ क्यों बैठे हैं? उन्होंने बताया कि सन्त कृपाल

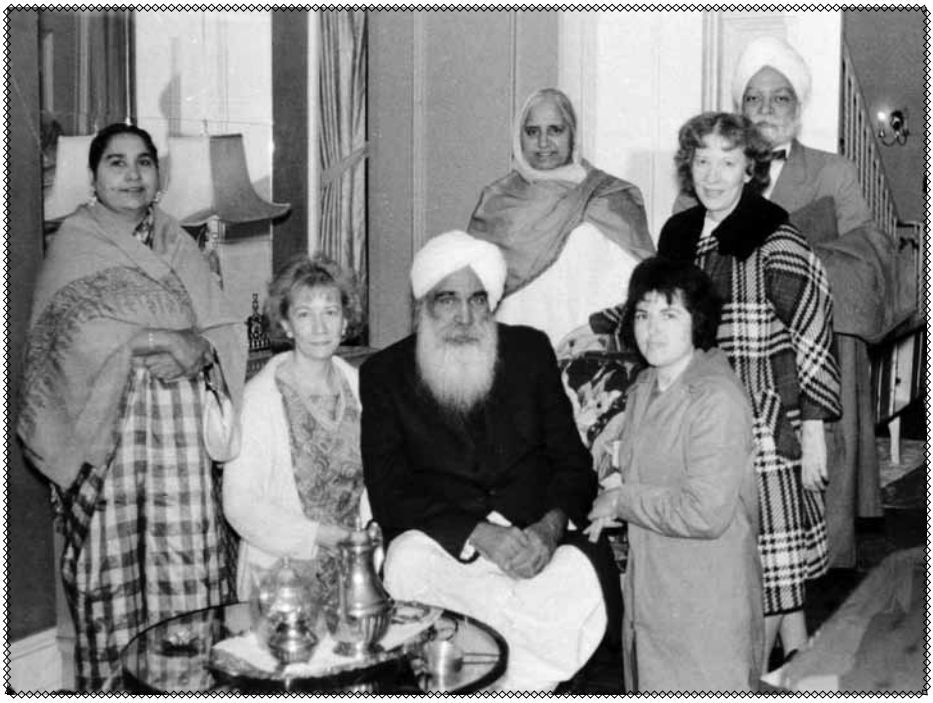

सिंह जी रोज यहाँ आकर सतसंग देते हैं। इसी दौरान महाराज जी वहाँ आए तब बीबी जेयना ने आपसे प्रार्थना की कि आप मुझे यहीं रहने दें।

महाराज कृपाल ने बीबी जेयना से कहा, ''तुझे लगातार अभ्यास करना होगा, गुरु हमेशा सेवक के साथ है सेवक जब भी गुरु को याद करता है गुरु उसका ध्यान रखता है।''

महाराज जी ने बीबी जेयना को यह भी बताया कि नहर में गिरना उसके पिछले कर्मों का भुगतान था क्योंकि उसकी किस्मत में नहर में डूबकर मरना लिखा था, गुरु ने उसके कष्ट को सूली का सूल बना दिया अगर वह दिन–रात अभ्यास करेगी तो उसे कोई डर नहीं होगा क्योंकि दयालु गुरु उसकी ज्यादा से ज्यादा मदद करेंगे।

***

जुलाई 1987

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से.....

दया प्राप्त करने का तरीका

बैंगलोर

आपको सदा वही भजन गाने चाहिए जिन्हें गाने की आपने प्रैक्टिस की है और दूसरे प्रेमी भी आपके साथ गा सकें। भजनों में बहुत उत्साह और तड़प होती है। आप लोगों के लिए भजनों का अधिक महत्व है क्योंकि ये भजन आपकी भाषा में नहीं हैं इसीलिए आप इन भजनों को सीखने के लिए दिल से कोशिश करते हैं। जब आप गलती से बचने के लिए भजन बार–बार गा रहे होते हैं तो आपको गुरु के शब्दों को पढ़ने का ज्यादा अवसर मिलता है जिससे आपको अधिक लाभ मिलता है।

पूर्ण गुरु सदा भजन लिखकर अपने गुरु के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। पूर्ण गुरु ही जानते हैं कि गुरु के पास क्या शक्ति होती है और वास्तव में गुरु क्या है? पूर्ण गुरु हमेशा अपने गुरु को विशाल महासागर समझते हैं और खुद को उसके आगे एक छोटा सा जीव समझते हैं।

पूर्ण गुरु दुनियावी लोगों को खुश करने के लिए भजन नहीं लिखते वे सभी आत्माओं पर दया बरसाते हैं। वे इंसानों पर ही नहीं पक्षियों और जानवरों पर भी दया करते हैं क्योंकि भजन उनके दिल की आवाज होते है। भजन पूर्ण गुरु के दिल से निकलते हैं इन भजनों को गाने और सुनने वाले दोनों को बहुत लाभ मिलता है।

मैं अक्सर उस समय के बारे में बताया करता हूँ जब मैं अपने प्यारे गुरु के सामने भजन गाया करता था। मुझे भजन गाने की आदत थी और आप मुझे भजन गाने का मौका देते थे। आप मेरे गाए भजनों से बहुत आनन्द लेते थे। कई बार अपने गुरु को याद करते हुए आपकी आंखें आंसुओं से भर जाती थी।

कई बार मेरे गाए हुए भजनों को सुनकर आप इस तरह खुश हो जाते थे जैसे बारिश को देखकर पपीहा खुश हो जाता है। प्यारेयो! बीमार आदमी ही जानता है कि बीमारी का कितना दु:ख है? जिन्होंने गुरु को देखा और समझा है केवल वही जानते हैं कि गुरु क्या है, गुरु का प्रेम क्या है?

गुरु मेरा चन्न वरगा, मेरी प्रीत ना चकोरां वाली x 2
परउपकार जो करें, लिखे जाण ना दातेया तेरे,

औगुणां दा मैं भरया, कोई गुण ना गुरु जी विच मेरे x 2
हो जाऐ तेरी मौज दातेया, भरे झोलियां तूं पल विच खाली,
गुरु मेरा चन्न...

दुनियां दे तारन लई, कुल मालिक जग विच आया,
बंदे दा तूं चोला पहन के, विच अपना आप छुपाया x 2
बाग ला के सावन ने, तैनूं सौंपेया बाग दा माली,
गुरु मेरा चन्न...

मेर-तेर दुनियां दी, इक पल विच आण मुकाई,
होका दे के सतनाम दा, रूहां तपदियां ठंड वरताई x 2
दर तेरे जो आ गया, कीती मौज तैं जग तों निराली,
गुरु मेरा चन्न...

सारा जग ढूंढ़ लया, ना मिलया सहारा कोई,
रख लवीं पैज दातेया, 'अजायब' करे अरजोई x 2
रख लै गरीब जाण के, तूं हैं संगत दा वाली,
गुरु मेरा चन्न...

RNI No. RAJHIN / 2003 / 9899